डॉ. वसन्त केशव मोरे
अध्यक्ष, हिन्दी विभाग
रा.छ.शाहू महाविद्यालय
कोल्हापुर ।

तथा

मानद अध्यक्ष, हिन्दी विभाग
शिवाजी विश्वविद्यालय,
कोल्हापुर ।

प्र मा ण प त्र

मैं प्रमाणित करता हूँ कि प्रा.कु.नसरीन युसुफ शेख ने शिवाजी विश्वविद्यालय की एम.फिल्. (हिन्दी) उपाधि के लिए प्रस्तुत लघु शोध-प्रबन्ध " राजेन्द्र यादव के ' सारा आकाश ' उपन्यास का समीक्षात्मक अध्ययन " मेरे निर्देशन में सफलतापूर्वक पूरे परिश्रम के साथ पूरा किया है ।यह कार्य पूर्व योजनानुसार सम्पन्न हुआ है । शोधार्थी ने मेरे सुझावोंका पूर्णत: पालन किया है । जो तथ्य प्रबन्ध में प्रस्तुत किये हैं, मेरी जानकारी के अनुसार सही है ।

निर्देशक

(डॉ. वसंत केशव मोरे)

कोल्हापुर ।
दिनांक : 31 : ५ : १९९१ ।

..

अनुक्रमणिका

पृष्ठ क्रमांक

प्राक्कथन 1-5

प्रथम अध्याय - राजेन्द्र यादव : व्यक्तित्व और कृतित्व 6-19

अ) व्यक्तित्व -

१) जन्म

२) माता-पिता

३) परिवार

४) शिक्षा

५) विवाह

आ) कृतित्व की पहचान

निष्कर्ष ----

द्वितीय अध्याय -

अ) `सारा आकाश` उपन्यास की कथावस्तु का अध्ययन 20-51

१) तात्त्विक विवेचन

२) कथानक के गुण

३) कथानक की विशेषताएँ

४) कथानक के आधार पर उपन्यासोंका वर्गीकरण

५) कथावस्तु के प्रकार

६) कथानक के तीन भाग

शोधार्क --

१) तात्त्विक विवेचन

२) शोधार्क की सार्थकता

पृष्ठ क्रमांक

आ) `सारा-आकाश` उपन्यास के देश-काल - वातावरण का अध्ययन ----

१) तात्विक विवेचन

२) देश-काल-वातावरण के भेद

क) सामाजिक वातावरण

ख) आर्थिक वातावरण

ग) राजनीतिक वातावरण

घ) प्राकृतिक वातावरण

तृतीय अध्याय - `सारा आकाश` उपन्यास में पात्र तथा चरित्र चित्रण का अध्ययन -- 52-98

१) तात्विक विवेचन

२) चरित्र चित्रण की विशेषताएँ

३) चरित्र चित्रण की प्रणालियाँ

४) चरित्र-चित्रण के गुण

५) पात्रों के प्रकार

६) `सारा आकाश` उपन्यास के पात्र --

क) समर का चरित्र-चित्रण

ख) प्रभा का चरित्र-चित्रण

ग) बाबूजी का चरित्र-चित्रण

घ) समर की अम्मा का चरित्र-चित्रण

ड) समर की भाभी का चरित्र-चित्रण

च) मुन्नी का चरित्र-चित्रण

छ) शिरीष का चरित्र-चित्रण

चतुर्थ अध्याय - अ) `सारा आकाश` उपन्यास के कथोपकथन का अध्ययन -- 99-136

१) तात्विक विवेचन

पृष्ठ क्रमांक

२) कथोपकथन के गुण

३) कथोपकथन का उद्देश्य

आ) `सारा आकाश` उपन्यास के भाषा शैली का अध्ययन --

१) तात्विक विवेचन

२) भाषा शैली के गुण

३) भाषा शैली के प्रकार ---

वर्णनात्मक शैली

आत्मकथात्मक शैली

पत्रात्मक शैली

विश्लेषणात्मक शैली

डायरी शैली

संकेत-अंक शैली

संवाद शैली

नाटकीय शैली

मनोविश्लेषणात्मक शैली

इ) `सारा आकाश` उपन्यास के उद्देश्य का अध्ययन --

१) तात्विक विवेचन

२) उद्देश्य --

संयुक्त परिवार

आर्थिक परिस्थिति

दहेज-प्रथा

अन्धविश्वास और शिक्षा

हिन्दू संस्कृति ,नेता और बेकारी

पृष्ठ क्रमांक

पंचम अध्याय -- उपसंहार 137-141

परिशिष्ट -- १) राजेन्द्र यादव का पत्र 142-146

२) मन्नू भण्डारी का पत्र

संदर्भ ग्रन्थ सूचि

प्राक्कथन

राजेन्द्र यादव स्वातन्त्र्योत्तर काल के हिन्दी के सबसे सशक्त उपन्यासकार हैं। प्राय: उनके सभी उपन्यासों में मध्यवर्गीय जीवन का यथार्थ चित्रण हुआ है। `सारा आकाश` उपन्यास यादव जी का पहला उपन्यास है, जिसे उन्होंने सन् १९५१ में लिखा था जो सन् १९५२ में `प्रेत बोलते हैं` के नाम से प्रकाशित हुआ था। इसमें देश की बदलती सामाजिक, आर्थिक तथा सांस्कृतिक परिस्थितियों का चित्रण निम्न मध्यवर्गीय समाज के परिप्रेक्ष्य में किया गया है। यादव जी के `सारा आकाश` में चित्रित निम्न-मध्य वर्गीय जीवन का अनुशीलन ही प्रस्तुत लघु शोध-प्रबन्ध का विषय और उद्देश्य है।

राजेन्द्र यादव के `सारा आकाश` पर शोध करने की प्रेरणा मुझे तब मिली कि जब मैंने उनका `सारा आकाश` उपन्यास पढा। स्वातन्त्र्योत्तर भारत के मध्यवर्गीय जीवन का जितना यथार्थ चित्रण इसमें हुआ है उतना मैंने अन्य किसी उपन्यास कार के उपन्यास में नहीं पढा था। यादव जी के इस उपन्यास ने मुझे अत्यधिक प्रभावित किया था। उसी समय मैंने यादव जी के `सारा आकाश` उपन्यास का विशेष अध्ययन करने का दृढ संकल्प किया था। इस लघु शोध-प्रबन्ध में मेरा वह संकल्प साकार हुआ है।

राजेन्द्र यादव पर अब तक चार शोध-कर्ताओं ने शोध कार्य किया है। कुमारी शशिकला त्रिपाठी ने `राजेन्द्र यादव : संवेदना और शिल्प` शीर्षक के अन्तर्गत काशी हिन्दू विश्वविद्यालय में सन् १९८६ को अपना शोध-प्रबन्ध पूर्ण किया। शशि रावत ने `आधुनिकता की दृष्टि से राजेन्द्र यादव और कमलेश्वर के कथा साहित्य का तुलनात्मक अध्ययन` शीर्षक से पंजाब विश्वविद्यालय में सन् १९८८ को अपना शोध-प्रबन्ध पूरा किया। नीरज शर्मा ने एस.एन.डी.टी. विश्वविद्यालय, बम्बई से `राजेन्द्र यादव के साहित्य में व्यक्ति और समाज का चित्रण` शीर्षक से तथा आचार्य एस.के.ने सौराष्ट्र विश्वविद्यालय से `राजेन्द्र

यादव : व्यक्तित्व एवं कृतित्व ` शीर्षक से शोधकार्य किया है ।

इस विषय का अध्ययन करते समय मेरे सामने निम्नांकित प्रश्न थे --

(१) राजेन्द्र यादव जी ने ` सारा आकाश ` के कथानक की कौनसी विशेषताएँ बतायी है ?

(२) ` सारा आकाश ` उपन्यास में सभी चरित्रों में शिरीष भाई को ही युवा पीढी का विचारक क्यों कहा है ?

(३) ` सारा आकाश ` के सभी चरित्रों में समर ही आदर्श पात्र क्यों है ?

(४) ` सारा आकाश ` उपन्यास के उद्देश्य क्या है ?

उपर्युक्त प्रश्नों का विवेचन करने के उपरान्त निष्कर्ष के रूप में जो तथ्य प्राप्त हुये वे उपसंहार में दिये है ।

अध्ययन की सुविधा की दृष्टि से मैंने अपने लघु शोध-प्रबन्ध को निम्नांकित पाँच अध्यायों में विभाजित कर अपने विषय का विवेचन किया है ।

लघु शोध-प्रबन्ध के प्रथम अध्याय में राजेन्द्र यादव जी के व्यक्तित्व एवं कृतित्व पर संक्षेप में विचार किया है । किसी भी रचनाकारका कृतित्व उसके व्यक्तित्व का दर्पण होता है । जीवन में जो भी कुछ पाया उसी को अपने साहित्य के जरिये अभिव्यक्ति प्रदान की है ।

द्वितीय अध्याय अ और आ में विभाजित है । अ विभाग में ` सारा आकाश ` उपन्यास की कथावस्तु का विवेचन किया है । उपन्यास का सम्पूर्ण कथानक कथा - नायक समर को केन्द्र-बिन्दु मानकर इर्द-गिर्द चक्कर काटते हुए आगे बढता है । समर की कथा उपन्यास की मूल कथा है । आ विभाग ` सारा -- - आकाश ` का देश-काल-वातावरण शीर्षक से है । इसमें सामाजिक, राजनीतिक, प्राकृतिक तथा आर्थिक वातावरण को लेकर किया गया है ।

तृतीय अध्याय शीर्षक है ` सारा आकाश ` उपन्यास में पात्र तथा चरित्र चित्रण । इस उपन्यास में नायक और नायिका समर और प्रभा है । अन्य पात्र गौण

है । चरित्र-चित्रण की विशेषाताएँ, चरित्र-चित्रण की प्रणालियाँ का विवेचन किया है ।

चतुर्थ अध्याय अ,आ,और इ में विभाजित किया है । ` अ ` का शीर्षक है -- ` सारा आकाश ` उपन्यास में कथोपकथन । कथानक को गति प्रदान करना, उपन्यास कार का जीवन दर्शन,पात्रों की व्याख्या करना आदि विशेषाताओंका समावेश कथोपकथन में किया गया है । ` आ ` का शीर्षक है ` सारा आकाश ` उपन्यास की भाषा शैली । सहजता और सरलता अभिव्यक्ति की अपूर्व क्षमता, मुहावरों का उचित प्रयोग, शैली के प्रकार आदि भाषा शैली में है । ` इ ` का शीर्षक है ` सारा आकाश ` उपन्यास का उद्देश्य । उद्देश्य में संयुक्त परिवार, आर्थिक परिस्थिति, दहेज-प्रथा,अन्धविश्वास और शिक्षा, हिन्दू संस्कृति,नेता और बेकारी इन सभीं का विवेचन किया है ।

पाँचवा अध्याय है उपसंहार । पूर्व विवेचित अध्यायों के वैज्ञानिक पध्दति से निकाले गये निष्कर्ष संक्षिप्त रुपमें उपसंहार में दिये है । उपसंहार के उपरान्त परिशिष्ट भी दिया गया है । प्रथम परिशिष्ट में राजेन्द्र यादव जी से प्राप्त संबंधित पत्र और द्वितीय परिशिष्ट में मन्नू भंडारी से प्राप्त पत्र दिया है । प्रबन्ध के अन्त में संदर्भ-ग्रन्थ सूची दी गयी है ।

कृतज्ञता - ज्ञापन --

लघु शोध-कार्य के संकल्प की मूर्ति श्रध्देय गुरुवर डॉ.वसंत केशव मोरे जी के कृपापूर्ण मार्गदर्शन का फल है । आपके सहयोग के बिना यह कार्य कैसे संपन्न होता ? ` गुरुबीन कौन बतावे बाट । आपने प्रस्तुत लघु शोध-प्रबन्ध के शीर्षक के चुनाव से लेकर अन्ततक अपने महत्वपूर्ण सुझाव दिए । सातत्यपूर्ण व्यस्तता के बावजूद आपने इस लघु शोध-प्रबन्ध का प्रत्येक अध्याय देखा और मुझे निरन्तर प्रोत्साहन एवं प्रेरणा देकर मेरी सहायता की । प्रस्तुत शोध प्रबन्ध आप ही के सुयोग्य निर्देशन का परिणाम है । आपके इस अनुग्रह से उऋण होना मेरे लिए असंभव है । आपके इसी स्नेह , प्रेरणा और आशीर्वाद की मैं निरन्तर अभिलाषी रहूँगी ।

मुझ पर दूसरा ऋण है खुद राजेन्द्र यादव जी का । आदरणीय राजेन्द्र यादव जी का अमूल्य योगदान मेरे इस कार्य में है । आपके स्नेह एवं आशीर्वाद के बन्धन में बँधे रहने में ही मैं अपनी धन्यता तथा सौभाग्य मानूँगी ।

आदरणीय डॉ. व्ही. व्ही. द्रविड, प्रा. शरद कणाबरकर, प्रा. मिस रजनी भागवत, प्रा. वेदपाठक, प्रा. तिवले का आशीर्वाद और प्रेम मेरे साथ रहा है, उनके प्रति मैं सविनय आभार प्रकट करती हूँ ।

कै. सौ. मालती वसंत (दादा) पाटील कन्या महाविद्यालय के मेरे प्राचार्य, जी. एम. जरे का प्रेम और सहायता के बिना मैं इस शोध कार्य की कल्पना भी नहीं कर सकती थी । आपने प्रेरणा का दीप जलाकर मुझे रोशनी दी । उन्होंने हर समय मुझे उत्साहित किया । उनके उपकार से ऋण होना मेरे लिए संभव नहीं है । भविष्य में भी आपके ऋण में रहने में मुझे सन्तोष होगा ।

मेरे परमपूज्य माँ और पिता, दोनों भाई, जिजाजी जिनके आशीर्वाद के बिना मेरे लिए हर कोई कार्य असंभव है, उनकी दुवा से ही मैं यह कार्य पूरा कर सकी । मैं निरन्तर उनके आशीर्वाद की छत्रछाया में रहने की कामना करती हूँ । मेरी बड़ी बहन सुहागन समीरा और छोटी बहन मुन्नी की प्रेरणा भी मुझे मिली । प्रा. मारनफ मुजावर ने एक दोस्त के रिश्ते से मुझे सहायता की, उनके प्रति मैं आभार प्रकट करती हूँ ।

शिवाजी विश्वविद्यालय के ग्रंथपाल डॉ. जाधव तथा यशवंतराव चव्हाण कॉलेज, इस्लामपुर के ग्रंथपाल दिलीप पाटील की सहायता के प्रति मैं उन्हें धन्यवाद देती हूँ ।

प्रा. पी. बी. मोकाशी, प्रा. आर. बी. शेडगे तथा हमारे कॉलेज के सभी प्राध्यापक और क्लार्क, सहेलियाँ तथा वाई के कदीर पठाण इनकी मैं आभारी हूँ, जिनकी शुभकामनाएँ मेरे साथ रही ।

अन्त में शोध-प्रबन्ध को अति शीघ्र एवं सुवाच्य रूपसे टंकलिखित रूप देने का काम श्रीयुत बाळकृष्ण रामचंद्र सावंत, जी ने बडी आत्मीयता से किया, इनके प्रति भी आभार प्रकट करती हूँ ।

(प्रा.कु.नसरीन युसुफ शेख)
(शोध-छात्र)

कोल्हापुर ।
दिनांक : ३१:५:१९९१ :

..